

विचार बिन्दु

मैं ही आग हूँ, मैं ही कूड़ा-करकट। अगर मेरी आग कूड़ा-करकट जलाकर भस्म कर दे तो मैं अच्छा जीवन पाऊँगा। -खलील जिब्रान

रेवड़ियां बांटना, वोट मांगना व वायदा करना लोकतंत्र के लिये अभिशाप है

आप (AAP) सरकार यानी सी एए आतिशी और आप संयोजक केजरीवाल की दो याजनायें, एक है महिला सम्मान योजना है, जिसके माध्यम से 18 वर्ष अधिक की आयु की महिलाओं को 1000/- रुपये प्रति माह देने की घोषणा है और केजरीवाल ने गारण्टी दी है कि उनकी सरकार बनी तो 2100/- रुपये प्रतिमाह दिये जायेंगे। दूसरी योजना का नाम है 'संजीवनी योजना' जिसके द्वारा वरिष्ठ नागरिकों को मुफ्त इलाज व मुफ्त परीक्षण प्राप्त होगा। दिल्ली विस चुनाव से पहले ये दोनों योजनायें प्रचारित हुई हैं।

महिला सम्मान योजना के कारण सियासी घमासान तेज हो गया है। राजनीति में भूचाल आ गया है। इस योजना के कारण एलजी वी के सम्बन्ध में जांच के आदेश दे दिये हैं। उपराज्यपाल सम्बन्ध में मुख्य सचिव व पुलिस कमिश्नर को पत्र लिखकर योजना के नाम पर गैर सरकारी लोगों द्वारा जनता का डेटा इकट्ठा करने की जांच व कानून के अनुसार कार्यवाही के आदेश दिये हैं। इसके अतिरिक्त एलजी के प्रधान सचिव ने पंजाब से कैश ट्रान्सफर के आरोपी की भी जांच के निर्देश दिये हैं तथा कांग्रेस के सम्भावित उम्मीदवारों के घर पर पंजाब सरकार के खुफिया कर्मियों की मौजूदगी के आरोप की भी जांच के निर्देश दिये हैं।

जांच की रिपोर्ट 3 दिन में पुलिस से मांगी गई है।

एलजी ने दिल्ली के सीएम को इस प्रकरण को मुख्य निर्वाचन कार्यालय के द्वारा भारत निर्वाचन आयोग के संज्ञान में लाने को कहा गया है, क्योंकि इनका प्रचार चुनाव से पूर्व हो रहा है। इस प्रकार का आदेश वस्तुतः कांग्रेस नेता संदीप दीक्षित की शिक्षा पर हुआ है। यहाँ यह लिखना भी समीचीन प्रतीत होता है कि एलजी ने यह भी निर्देश दिया है कि ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध कार्यवाही हो जो लाभ दिलाने के नाम पर नागरिकों के व्यक्तिगत विवरण ले रहे हैं, क्योंकि ऐसा करना गोपनीयता का उल्लंघन है।

कांग्रेस व भारतीय जनता पार्टी दोनों ने आप की इस योजना पर कई प्रश्न उठाये हैं। दिल्ली के अफसरों ने अखबार में विज्ञापन देकर कहा है कि दिल्ली सरकार ऐसी कोई योजना नहीं चला रही है।

अरविन्द केजरीवाल ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर एलजी पर आरोप लगाया है और अपने स्वयं पर आरोपों का उत्तर दिया है। उन्होंने कहा हमने कहा था कि महिला सम्मान योजना में 2100/- रुपये हर महीने दिये जाएंगे। केबिनेट ने 1000/- रुपये देने की योजना पास की थी। उनकी दूसरी योजना बुजुर्गों को फ्री इलाज की थी।

केजरीवाल का कहना है कि आम आदमी पार्टी व उनकी योजनाओं के कारण भाजपा घबरा गई है। उनकी नींद उड़ गई है। बीजेपी समझ चुकी है कि वह तो हारने वाली है। भाजपा की 3-4 सीटों से अधिक सीटें नहीं आयेगीं। अतः उसका यह इरादा है कि आप की सभी जन हिंसे की योजनाओं को सहायता करने का फण्ड है, उसका कोई संबंध किसी राजनैतिक पार्टी से नहीं है। हां, वे भाजपा के पक्ष के व्यक्ति हैं। परंपर भाजपा के नेताओं का नाम है पैसा वास्तव में वोट देने के हेतु ऐसा कहा जा रहा है। एक अन्य घटना का भी यहाँ उल्लेख करना उचित होगा कि केजरीवाल कांग्रेस से कहते हैं माइन को निकालो नहीं तो 'आप' इण्डिया बन्धन से अलग हो जावेगी। यह स्पष्ट करता है केजरीवाल व राहुल में आमने सामने की लड़ाई है।

संदीप दीक्षित नेता कांग्रेस का कहना है कि वे तो सत्य के साथ खड़े हैं। पैसे देकर वोट मांगना चुनाव कानूनों में अपराध है और यों भी लोकतंत्र के लिये यह अभिशाप है।

एक और घटना चक्र है, जहाँ प्रवेश वर्मा महिलाओं को 1100/- रुपये दे रहे हैं। उनका कहना है उनके पास गरीबों की सहायता करने का फण्ड है, उसका कोई संबंध किसी राजनैतिक पार्टी से नहीं है। हां, वे भाजपा के पक्ष के व्यक्ति हैं। परंपर भाजपा के नेताओं का नाम है पैसा वास्तव में वोट देने के हेतु ऐसा कहा जा रहा है। एक अन्य घटना का भी यहाँ उल्लेख करना उचित होगा कि केजरीवाल कांग्रेस से कहते हैं माइन को निकालो नहीं तो 'आप' इण्डिया बन्धन से अलग हो जावेगी। यह स्पष्ट करता है केजरीवाल व राहुल में आमने सामने की लड़ाई है।

यहाँ प्रश्न है क्या यह योजना केजरीवाल जी की व्यक्तिगत है अथवा आम आदमी पार्टी (आप) की? अथवा सरकारी स्वीकृति से है यह स्पष्ट नहीं है। दिल्ली की सीएम इस बाबत मौन हैं। केजरीवाल जी कहते हैं कि वे पैसे की कमी नहीं आने देंगे। क्या इससे यह मान लेना चाहिये कि उनकी स्थिति जामिन की है। बीजेपी केजरीवाल पर आरोप लगा रही है वे फ्रीबीज देने हेतु वायदा ही करते हैं, देते नहीं हैं।

आम आदमी पार्टी के कार्यकर्ताओं के खिलाफ कार्यवाही की जा सकती है। राजनीति में चर्चा है कि पंजाब में केजरीवाल की पार्टी ने वायदों के अनुसार पेमेन्ट नहीं किया। अतः अन्य राजनीतिक पार्टियाँ कहती हैं कि उन पर भरोसा करना कठिन है। केजरीवाल की पार्टी ने इमामों को वेतन देने का वायदा किया था; किन्तु 17 माह से पेमेन्ट नहीं किया। केजरीवाल ने अपने स्टेटमेंट में कहा है कि उनकी योजना है कि 'पुजारी-ग्रन्थी सम्मान' की राशि रुपये 18000/- प्रतिमाह दी जावे। उनका आरोप है कि बीजेपी इस योजना को रोकना चाहती है। दिनांक 31.12.2024 से रजिस्ट्रेशन प्रारम्भ हो चुका है। यह राशि चुनाव में जीतने के बाद प्रतिमाह दी जावेगी। यहाँ प्रश्न है क्या यह योजना केजरीवाल जी की व्यक्तिगत है अथवा आम आदमी पार्टी (आप) की? अथवा सरकारी स्वीकृति से है यह स्पष्ट नहीं है। दिल्ली की सीएम इस बाबत मौन हैं। केजरीवाल जी कहते हैं कि वे पैसे की कमी नहीं आने देंगे। क्या इससे यह मान लेना चाहिये कि उनकी स्थिति जामिन की है। बीजेपी केजरीवाल पर आरोप लगा रही है वे फ्रीबीज देने हेतु वायदा ही करते हैं, देते नहीं हैं। केजरीवाल जी ने फ्रीबीज की पोर्टली खल दी है। वे रिश्ता चालकों का बीमा करायेंगे, लड़कियों की शादी में सहयोग देंगे तथा दलित छात्रों को शिक्षा हेतु विदेश भेजेंगे। जनता हित में यदि हो तो अवश्य करें। आपत्ति यह है कि फ्रीबीज की घोषणायें चुनाव के समय ही क्यों होती हैं?

जन प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 जिसे साधारण भाषा में चुनाव कानून कहते हैं, उसके प्रावधानों के अनुसार पैसे देकर वोट लेना अपराध है। पैसे से वोट खरीदना अनैतिक आचरण है, क्योंकि हम लोकतंत्र के नागरिक हैं और संविधान के अनुच्छेद 51 क में दिये गये कर्तव्यों की पालना करना हमारा पावन कर्तव्य है। पैसे देकर वोट खरीदना चुनावी दुराचरण है और इस कारण यदि चुनाव का रिजल्ट प्रभावित हुआ है तो चुनाव निरस्त भी हो सकता है। चुनाव कानून 1951 की धारा 123 में चुनावों से संबंधित अपराध आते हैं।

धारा 123 में Bribe (रिश्तव) को परिभाषित किया गया है वह संक्षेप में इस प्रकार है:- "कोई उम्मीदवार, उसका एजेन्ट या उसकी सहमति से कोई अन्य व्यक्ति, किसी व्यक्ति को वोट देने या न देने के हेतु प्रभावित करने हेतु उपकार या वायदा जिसका उद्देश्य प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उसे प्रेरित करना हो किसी निर्वाचक को चुनाव में मतदान करने या न करने के लिये परहेज करने के लिये।"

यदि कानूनी रूप से इस प्रावधान की व्याख्या की जावे तो रेवड़ी बांटना, वायदा करना और वोट मांगना यह चुनावी अपराध है और अनैतिक आचरण है। कानून के लोग यह मानते हैं कि वायदा पूरा न करने पर सजा होनी चाहिये। कुछ मानते हैं सुप्रीम कोर्ट को संज्ञान लेकर फ्रीबीज को चुनाव निरस्त करने का कारण मानना चाहिये। मुफ्त की रेवड़ी बांटकर देश को खोखला किया जा रहा है। प्रारम्भ में जब कानून बना था वोट की चोरी होती थी, चोरी छिपे पैसा दिया जाता था, किन्तु अब तो पकड़े जाने पर शर्म भी नहीं आती।

अभी तक 'आप' के अतिरिक्त किसी पार्टी ने उम्मीदवारों की लिस्ट जारी नहीं की है। यहाँ उम्मीदवार का नाम जिसके लिये वोट अपेक्षित है, स्पष्ट है। जनता अपील करती है रेवड़ियां बांटना बंद हो। चुनाव Fair व Free हों।

बीजेपी का आरोप है कि केजरीवाल रेवड़ी बांटने में माहिर हैं, वे वायदे करने में भी सिद्धहस्त हैं। अन्य राजनीतिक पार्टियाँ यदि उनके पद चिन्हों पर न चले तो अच्छा होगा। देश हित में होगा। जनता सब समझती है। जनता सभी रेवड़ी बांटने (फ्रीबीज) वाले से पूछना चाहती है, आप फ्रीबीज दे रहे हैं परन्तु समझाओ पैसा कहाँ से लायेंगे, वायदे की गारण्टी पूरा करने के लिये आपके पास अपनी प्रोपर्टी कहाँ है? क्या सरकारी खजाने से पेमेन्ट करेंगे? जनता केजरीवाल से पूछना चाहती है, आप यह वायदा राज्य की मुख्यमंत्री से क्यों नहीं करवाते? वे जानते हैं यदि मुख्यमंत्री पुजारी-ग्रन्थी, टीचर्स, इमाम से वायदा करती हैं, यह जानते हुये कि सरकार की पूंजी की वे ट्रस्टी हैं तो सम्भवतः यह केस Fraud (धोखे) का बन सकता है। धोखा जिसे पूर्व कानून में 420 कहा गया था।

जैसा ऊपर लिखा कि एलजी ने जांच की रिपोर्ट पुलिस से मांगी थी। रिपोर्ट पोजिटिव आई है। केस चलेगा। वह सब कुछ वही होगा, जो न्याय संगत होगा।

फ्रीबीज की प्रेक्टिस वह भी चुनाव के समय, कानून बनाकर प्रतिबंधित की जानी चाहिये। देने वाले को चुनाव लड़ने से Disqualified किया जावे।

चुनाव Fair व Free हो जनता की पुकार है।

भारत के लोकतंत्र की जय हो!

-अतिथि सम्पादक,
पानाचन्द्र जैन
पूर्व न्यायाधीश, राजस्व हाई कोर्ट

राजसखी सरस राष्ट्रीय मेला और जीआई-टैग



डॉ. अरुणा ध्यास

कुछ दिन पहले जवाहर कला केन्द्र में राजसखी सरस राष्ट्रीय मेला-2024 का आयोजन हुआ। इसमें देश के विभिन्न राज्यों से आए कोई दौसौ से अधिक स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के उत्पाद प्रदर्शित हुए। देशभर के प्रांतों के हस्तशिल्प, हुनर उत्पाद और वस्त्र आदि का प्रदर्शन इस दौरान हुआ।

राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के तहत राजस्थान ग्रामीण आजीविका विकास परिषद द्वारा आयोजित मेला ग्रामीण महिलाओं के आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण की दिशा में महत्वपूर्ण प्रयास कहा जा सकता है। मेले

में विभिन्न राज्यों के पारंपरिक हस्तशिल्प, हैंडलूम, खाद्य उत्पाद, और उन्नत तकनीकी उत्पादों को देखकर यह भी अनुभूत हुआ कि हरेक राज्य की अपनी विशेषता, रहन-सहन, खान-पान और हस्तशिल्प उत्पाद हैं। मेले में विभिन्न राज्यों की महिला स्वयं सहायता समूह द्वारा प्रदर्शित उत्पादों की मुख्य थीय इस बार जीआई-टैग उत्पाद रही। ग्रामीण क्षेत्रों और हुनर से जुड़े विशिष्ट उत्पादों के लिए जीआई-टैग की सोच बहुत महत्वपूर्ण है। जीआई टैग का अर्थ है उत्पाद की भौगोलिकता के बारे में पता चलना।

भारत ने विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यूटीओ) के सदस्य के रूप में वस्तुओं के भौगोलिक संकेत के लिए जीआई टैग की शुरूआत की। यह उत्पाद के स्थान विशेष पर ही उत्पादित होने की बौद्धिक संपदा अधिकारों की रक्षा करता है। यह असल में संकेतक है, जिसका उपयोग एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र से उत्पन्न होने वाली विशेष विशेषताओं वाले वस्तुओं और उत्पादों को पहचान प्रदान करने के लिये किया जाता है। परिश्रम-कर्मचारी के अनुच्छेद 1 (2) और 10 के तहत यह निर्णय लिया गया और यह भी कहा गया कि औद्योगिक संपत्ति और भौगोलिक संकेत का संरक्षण बौद्धिक संपदा के तत्त्व है। यह मुख्य रूप से कृषि, प्राकृतिक या हस्तशिल्प और औद्योगिक सामान है। एक बार भौगोलिक संकेतक का दर्जा प्रदान कर दिये जाने के बाद कोई अन्य निर्माता समान उत्पादों के विपणन के लिये इसका नाम का दुरुपयोग नहीं कर सकता है। यह टाहकों को उस उत्पाद की प्रामाणिकता के बारे में भी सुविधा प्रदान करता है। किसी उत्पाद का भौगोलिक संकेतक यानी जीआई टैग अन्य पंजीकृत भौगोलिक संकेतक के अर्थभेदक उपयोग को रोकता है। जीआई टैग असल में "ऐसी पहचान है जो किसी वस्तु को उसके उत्पादक सदस्य के क्षेत्र या उस क्षेत्र में किसी क्षेत्र या इलाके में उत्पन्न होने के रूप में पहचानते हैं। जहाँ वस्तु की दी गई गुणवत्ता, प्रतियोगिता या अन्य विशेषता अनिवार्य रूप से उसके भौगोलिक मूल के कारण होती है। जीआई टैग अधिकृत उपयोगकर्ता के रूप में पंजीकृत लोगों के अलावा किसी और को लोकाप्रिय उत्पाद का नाम इस्तेमाल करने की अनुमति नहीं देता है। इसका बड़ा उदाहरण है-दार्जिलिंग चाय।"

जीआई टैग पाने वाला भारत का

पहला उत्पाद दार्जिलिंग चाय रहा है। दार्जिलिंग टी (चाय) को 2004 में पहला जीआई टैग मिला। दार्जिलिंग चाय, महाबलेश्वर स्टूबेरी, जयपुर के ब्लू पॉटर, बनारसी साड़ी, बीकानेर के भूशिया-पापड़, बासमती चावल, चंदेरी फैब्रिक, मैसूर सिल्क, कुल्चू शॉल, फर्रुखाबाद प्रिंट, लखनऊ रजदोजी आदि बहुत से उत्पादों को उनके स्थान के नाम से जाना जाता है। चंदेरी फैब्रिक, मैसूर सिल्क, कुल्चू शॉल, कांगड़ा चाय, तंजावूर पेंटिंग, कश्मीर केसर और कश्मीर अखरोट की लकड़ी की नक्काशी आदि जीआई टैग लिए हैं। उत्पादक के हितों के संरक्षण के साथ ही यह उपभोक्ता को भी शुद्ध उत्पाद, जहाँ यह होता है-उसकी गारण्टी देता है।

जीआई टैग पाने के लिए, कोई भी व्यक्ति, संगठन या राज्य सरकार के अंतर्गत कोई वैध संगठन आवेदन कर सकता है। इससे अंतर्गत उत्पाद या सामान पंजीकरण की उचित प्रक्रिया है। इसमें आवेदन दाखिल करना, प्रारंभिक जाँच और परीक्षा, भौगोलिक संकेत पत्रिका में प्रकाशन, पंजीकरण शामिल है। कानून द्वारा या उसके तहत स्थापित व्यक्तियों, उत्पादकों, संगठन या प्राधिकरण का कोई भी संघ आवेदन कर सकता है। यह जरूरी

है कि आवेदक को उत्पादकों के हितों का प्रतिनिधित्व करने वाला होना चाहिए। जीआई टैग पाने वाला 10 साल की अवधि के लिए वैध होता है। इसे समय-समय पर 10-10 वर्षों की अतिरिक्त अवधि के लिए नवीकृत किया जा सकता है। यदि एक जीआई टैग जीआई का नवीनीकरण नहीं किया जाता है, तो उसे रजिस्टर से हटाया जा सकता है। ट्रेडमार्क और जीआई में फर्क है। ट्रेडमार्क एक ऐसा संकेत है जिसका उपयोग व्यापार के दौरान किया जाता है और यह एक उद्यम की वस्तुओं या सेवाओं को अन्य उद्यमों से अलग करता है। जबकि, जीआई एक संकेत है जिसका उपयोग एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र से उत्पन्न होने वाली खास विशेषताओं वाले सामानों की पहचान करने के लिए किया जाता है।

राजस्थान में इस बार राजसखी मेले के अंतर्गत इन महिला स्वयं सहायता समूह के उत्पाद प्रदर्शित हुए, वह सभी अपने क्षेत्र की विशेषताओं से जुड़े थे। जीआई उत्पादों के एक छत के नीचे भारत भर से अद्वितीय उत्पादों को यहाँ प्राप्त किया जा सकता था।

-डॉ. अरुणा ध्यास
समसामयिक विचारों की टिप्पणीकार

एक राष्ट्र-एक चुनाव: अवसर और चुनौतियाँ



राम शर्मा

सकते हैं, वे भी नहीं हो पाते। इसलिए एक एकीकृत राष्ट्रीय चुनाव प्रक्रिया पर लंबे समय से विचार हो रहा था। इस एकीकृत चुनाव प्रक्रिया को ही आमतौर पर एक राष्ट्र- एक चुनाव के रूप में जाना जाता है। एक राष्ट्र- एक चुनाव देश के लिए अवसर और चुनौती दोनों ही हैं। इसका सबसे बड़ा लाभ आर्थिक बचत है। भारत में नियमित आधार पर चुनाव होने से इस पर बहुत ज्यादा सार्वजनिक धन का व्यय होता है। इन चुनावों को एक साथ कराकर सरकार लाखों करोड़ रुपए बचा सकती है, जिसका एक बड़ा हिस्सा विकास गतिविधियों की ओर लगाया जा सकता है।

भारत में लगभग हर साल अलग-अलग स्तरों पर चुनाव होते हैं, जिससे मतदाता भी उदासीन हो जाते हैं। मतदाता, उम्मीदवार और राजनीतिक दल अक्सर लगातार प्रचार के चक्र में फँस जाते हैं। एक साथ चुनाव कराने से इस उदासीनता को कम करने में मदद मिल सकती है, जिससे यह सुनिश्चित होगा कि चुनावी गतिविधियाँ अधिक केंद्रित हों और शासन के लिए कम व्यवधानकारी हों। इसके अतिरिक्त, इससे मतदाता मतदान में वृद्धि हो सकती है।

भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है। यहाँ चुनाव एक सतत प्रक्रिया हैं। लोकसभा चुनाव खत्म होते हैं तो विधानसभा चुनाव, फिर शहरी निकायों के चुनाव और ग्राम पंचायतों के चुनाव। इस प्रकार राजनीति फुल टाइम चुनाव में व्यस्त रहते हैं। सरकारी मशीनों भी आए दिन आचार संहिता शासन हो सकता है क्योंकि चुनावी जनादेश एकीकृत होते हैं। एक मजबूत राष्ट्रीय जनादेश संभावित रूप से राज्य-

स्तरीय नेतृत्व को मजबूत कर सकता है, और इसके विपरीत, केंद्र और राज्य सरकारों के बीच सहज समन्वय सुनिश्चित कर सकता है। राष्ट्रीय मुद्दों पर ध्यान: एक साथ चुनाव कराने से, इस बात की अधिक संभावना है कि राष्ट्रीय मुद्दों पर केंद्रित होता है जो राष्ट्रीय चर्चा के लिए प्रसंगिक नहीं हो सकते हैं। एक साथ चुनाव कराने से राष्ट्रीय सुरक्षा, अर्थव्यवस्था और विदेश नीति जैसे मुद्दों पर व्यापक ध्यान केंद्रित होगा। हालाँकि कांग्रेस सहित विपक्षी दल इसी बात से चिंतित हैं कि मतदाता संसदीय और विधानसभा चुनाव में अलग अलग मानसिकता से वोट करता है। एक साथ चुनाव होने से स्थानीय मुद्दे गौण हो जाएँगे, जिसका लाभ अंततः केन्द्र में सतारूढ़ दल को मिलेगा।

भारत के संविधान में लोकसभा और राज्य विधानसभाओं के लिए अलग-अलग चुनाव चक्रों की कल्पना की गई है, और इस ढाँचे को संशोधित करने के लिए महत्वपूर्ण संवैधानिक संशोधनों की आवश्यकता होगी। राज्यों में एक साथ चुनाव कराने के लिए वहाँ भी कई कानूनों में संशोधन करने की आवश्यकता होगी। इसके अतिरिक्त, कुछ राज्य परिवर्तन का विरोध कर सकते हैं, खासकर अगर उन्हें लगता है कि एक साथ चुनाव उनकी स्थानीय राजनीतिक स्वायत्तता को कमजोर करेंगे।

भारत में अलग-अलग स्थानीय मुद्दों वाले क्षेत्रों दलों की एक विशाल श्रृंखला है। एक साथ राष्ट्रीय और राज्य चुनाव कराने पर जोर देने से ये क्षेत्रीय आकांक्षायें कमजोर हो सकती हैं। मौजूदा व्यवस्था में, राज्य चुनाव छोटे दलों को अपने हितों का प्रतिनिधित्व करने के लिए एक मंच प्रदान करते हैं। एक साथ चुनाव से राष्ट्रीय मुद्दे स्थानीय चिंताओं पर हावी हो सकते हैं, जिससे क्षेत्रीय दलों के लिए पर जमाना मुश्किल हो सकता है।

भारत जैसे विशाल देश में, इसकी विविध भौगोलिक स्थिति, सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियाँ और जनसंख्या घनत्व के साथ चुनाव आयोजित करना एक जटिल कार्य है। एक साथ चुनाव कराने से मौजूदा बुनियादी ढांचा चरमराम सकता है, जिसके लिए चुनाव आयोग, राज्य सरकारों और अन्य हितधारकों के बीच बड़े पैमाने पर योजना और समन्वय की आवश्यकता होगी। ग्राम, ग्रुटियाँ और मतदाता वंचितता की संभावना बढ़ सकती है, खासकर ग्रामीण या दूरदराज के क्षेत्रों में जहाँ मतदान केंद्रों और सूचना तक पहुँच सीमित है।

मतदाता व्यवहार पर प्रभाव: जबकि एक राष्ट्र एक चुनाव की प्रक्रिया चुनावी मतदाता को उदासीनता को कम कर सकती है, इससे मतदाता भ्रम में भी पड़ सकता है। अलग-अलग चुनावों में अलग-अलग मतदान प्रणाली होती है (जैसे, लोकसभा चुनावों के लिए प्रस्ट-पास-ट-पोस्ट और कुछ राज्य विधानसभाओं के लिए मिश्रित प्रणाली), और एक ही दिन में कई कार्यालयों के लिए मतदान करने की जटिलता मतदाताओं को अलग-अलग कर सकती है, खासकर वे जो राजनीतिक रूप से कम जुड़े हुए हैं। एक राष्ट्रीय चुनाव चक्र बेहतर संसाधनों और संगठनात्मक पहुँच के साथ बड़ी राष्ट्रीय पार्टियों को लाभ पहुँचा सकता है, जिससे छोटी क्षेत्रीय और स्थानीय पार्टियाँ किनारे हो सकती हैं। एक साथ होने वाले चुनावों के दौरान राष्ट्रीय पार्टियाँ राजनीतिक एजेंडों पर हावी हो सकती हैं, जिससे क्षेत्रीय प्रतिनिधित्व की कमतरता पर उनकी शक्ति और मजबूत हो सकती है।

चुनावों के समन्वय के परिणामस्वरूप राज्य स्तर पर कम गठबंधन सरकारें हो सकती हैं, क्योंकि मतदाता केंद्र सरकार के साथ गठबंधन करने वाले पार्टियों का पक्ष ले सकते हैं। यह राज्य स्तर पर राजनीतिक प्रतिनिधित्व की विविधता को प्रभावित कर सकता है, जिससे क्षेत्रीय चिंताओं

को अनदेखा या अनदेखा किए जाने पर संभावित राजनीतिक अस्थिरता या शासन संबंधी मुद्दे पैदा हो सकते हैं। शर्तों और विधेयन के साथ कानूनी और तकनीकी चुनौतियाँ: एक राष्ट्र एक चुनाव को लागू करने के लिए, लोकसभा चुनावों के साथ समन्वय करने के लिए विभिन्न विधानसभाओं के कार्यकाल को छोटा या बढ़ाया जाना चाहिए। इससे निर्वाचित प्रतिनिधियों के कार्यकाल से संबंधित कानूनी मुद्दे उठेंगे। इसके अलावा, अगर कोई सरकार अपने कार्यकाल के बीच में ही विस्थापित हो देती है, तो चुनाव इस तरह से कराने में कठिनाई का कारण बन सकता है।

निष्कर्ष: एक राष्ट्र, एक चुनाव प्रस्ताव कई संभावित लाभ प्रदान करता है, जिसमें लागत बचत, बेहतर शासन स्थिरता और मतदाता ध्यान में कमी शामिल है। हालाँकि, इसके कार्यान्वयन के लिए कई संवैधानिक, तार्किक और राजनीतिक चुनौतियों का समाधान करना होगा। जबकि राष्ट्रीय और राज्य चुनावों का समन्वय एक कुशल और सुव्यवस्थित दृष्टिकोण की तरफ लक्ष्य कर सकता है। भारत के राजनीतिक परिदृश्य की विविधता, इसके जटिल कानूनी ढाँचे और केंद्रीकरण के जोखिम पर सावधानीपूर्वक विचार किया जाना चाहिए। इसके प्रभावी ढंग से काम करने के लिए, राष्ट्रीय एकता सुनिश्चित करने और भारतीय लोकतंत्र की जीवंत, बहुलवादी प्रकृति को संरक्षित करने के बीच एक सावधानीपूर्वक संतुलन बना होगा। अंततः, इस महत्वाकांक्षी सुधार की व्यवहार्यता और व्यापक प्रभाव का परीक्षण करने के लिए राह विचार-विमर्श, परामर्श और पारदर्शक कार्यक्रमों को शामिल होना आवश्यक होगा।

-राम शर्मा, वरिष्ठ पत्रकार

खाजूवाला में सर्दी से युवक की मौत

बीकानेर, (निर्स)। जिले के खाजूवाला में सर्दी से युवक की मौत का मामला सामने आया है। सफाईकर्मियों का काम के बाद वह बस स्टैंड पर ही सो गया था। उसके पास संभवतः ओढ़ने के लिए भी कुछ नहीं था। मृतक के भाई बलकार सिंह ने खाजूवाला पुलिस में रिपोर्ट दी है।

रिपोर्ट में बताया कि उसका भाई तरसेम सिंह (50) बस स्टैंड पर सफाई-सफाई करके अपना जीवन-यापन करता था। रोडवेज बस स्टैंड पर बने शौचालय के पास रात गुजारता था। 31 दिसम्बर की रात वह शौचालय के पास सोया था। संभव है कि उसके पास ओढ़ने के लिए कुछ नहीं था। एक

सफाईकर्मियों का काम के बाद वह बस स्टैंड पर ही सो गया था, उसके पास संभवतः ओढ़ने के लिए भी कुछ नहीं था।

जनवरी की सुबह लोगों ने उसे देखा, वह तब तक मौत हो चुकी थी। हनीफ अलौ नागौरी नामक शख्स ने उसे सबसे पहले देखा था।

वह अर्द्धनग्न अवस्था में ही चारपाई पर पड़ा था। मृतक तरसेम के भाई बलकार सिंह ने पुलिस को बताया कि सर्दी में टिट्टरन के चलते उसकी

मौत हुई है। रात के समय वह बिना कपड़े पहने ही सो गया था। नशे की हालत में उसे पता भी नहीं चला कि सर्दी लग रही है। ऐसे में सर्दी से टिट्टरने हुए उसकी मौत हो गई। पुलिस ने उसका शव सरकारी हॉस्पिटल पहुँचाया। पोस्टमार्टम के बाद शव परिवर्तनों को सौंपा गया।

राशिफल शुक्रवार 3 जनवरी, 2025



पंडित अनिल शर्मा

पौष मास, शुक्ल पक्ष, चतुर्थी तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत् 2081, धनिष्ठा नक्षत्र रात्रि 10:22 तक, वज्र योग दिन 12:37 तक, वणिज करण दिन 12:24 तक, चन्द्रमा दिन 10:48 से कुम्भ राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-धनु, चन्द्रमा-मकर, मंगल-कर्क, बुध-वृश्चिक, गुरू-वृष, शुक्र-कुम्भ, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में। आज रवियोग रात्रि 11:22 तक है। भद्रा दिन 12:24 से रात्रि 11:40 तक रहेगी। आज विनायक चतुर्थी है। पंचक दिन 10:48 से आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघडियाँ: चर सूर्योदय से 8:38 तक, लाभ-अमृत 8:38 से 11:13 तक, शुभ 12:31 से 1:44 तक, चर 4:24 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 7:20, सूर्यास्त 5:42

मेघ
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक परेशानियों से रहित मिलेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बने लगे। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृष
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वसन प्राप्त होगा। अटक हुए कार्य बने लगे। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। शुभ कार्यों से संबंधित यात्रा हो सकती है।

मिथुन
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अग्र भाव में शुभ नहीं है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब होने का भय है। बन्ते कार्य बिगड़ सकते हैं। दिन के मध्यान्ध पर्याप्त अटक हुए कार्य बने लगे।

कर्क
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहे। परिवार में धार्मिक-मौलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। दिन के मध्यान्ध पर्याप्त अटक हुए कार्य बने लगे।

सिंह
स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

कन्या
शुभ-मौलिक कार्य के लिए यात्रा संभव है। परिवार में मांगलिक संदेश प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा।

तुला
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। सुख-सुविधाएं बढ़ेंगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

वृश्चिक
परिवार में शुभ संदेश प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

धनु
आर्थिक कार्यों से अटक हुए कार्य बने लगे। अटक हुआ आन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

मकर
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नवीन कारोबारी योजना का क्रियान्वयन होगा। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।

कुंभ
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा। दिन के मध्यान्ध पर्याप्त अटक हुए कार्य बने लगे।

मीन
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बना रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटक हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।